Ph.: Off.: 2633233/2955977
aryawani.ngp@gmail.com

|| ओ३म् ||

दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय
आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित
(Regd. under Societies Act. XXI)
जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

# Brief Report

## Brief Report of Project / Field/ Internship Work (1.3.3)

| | | |
|---|---|---|
| Name of the Project Undertaken | Vaddyo ke Vargikaran Tatha Tanpura Vaddya Ki Jankari | |
| Academic Session | 2018-19 | |
| Organizing Department/ Committee | Music | |
| Total Number of Students Participated in the Project | 07 | |
| Brief Report | The Project entitled **Vaddyo Ke Vargikaran Tatha Tanpura Vaddya Ki Jankari** was undertaken by the Department of Music during the session of 2018-19 under the guidance of Internal Quality Assurance Cell of the Institution. Total 07 students participated in the project activity and successfully completed the project. The completion certificate has been given to the students. All students found it very interesting to learn through the experiential learning. They enjoyed the project work. | |
| Criterion :1 | Metric no-1.3.3 | |
| Signature of Co-Ordinator | Signature & Stamp of IQAC Co-Ordinator<br>IQAC Coordinator<br>Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya<br>Jaripatka, Nagpur | Signature of & Stamp of Principal<br>Principal<br>Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya<br>Jaripatka, Nagpur |

| | | |
|---|---|---|

Ph.: Off.: 2633233/2955977
aryawani.ngp@gmail.com

|| ओ३म् ||

# दयानन्द आर्य कन्या महाविद्यालय

आर्य विद्या सभा द्वारा संचालित

(Regd. under Societies Act. XXI)

जरीपटका, नागपुर ४४००१४.

## Students Information

| S.N. | Name of Student | Program | Class |
|---|---|---|---|
| 1 | Hrutuja Jambhukar | B.A. | I Year |
| 2 | Damini Sonkusare | B.A. | I Year |
| 3 | Saraswati Sahu | B.A. | I Year |
| 4 | Pranita Game | B.A. | I Year |
| 5 | Shrutika Bhagwat | B.A. | I Year |
| 6 | Pragati Dongare | B.A. | I Year |
| 7 | Simanjali Gupta | B.A. | I Year |

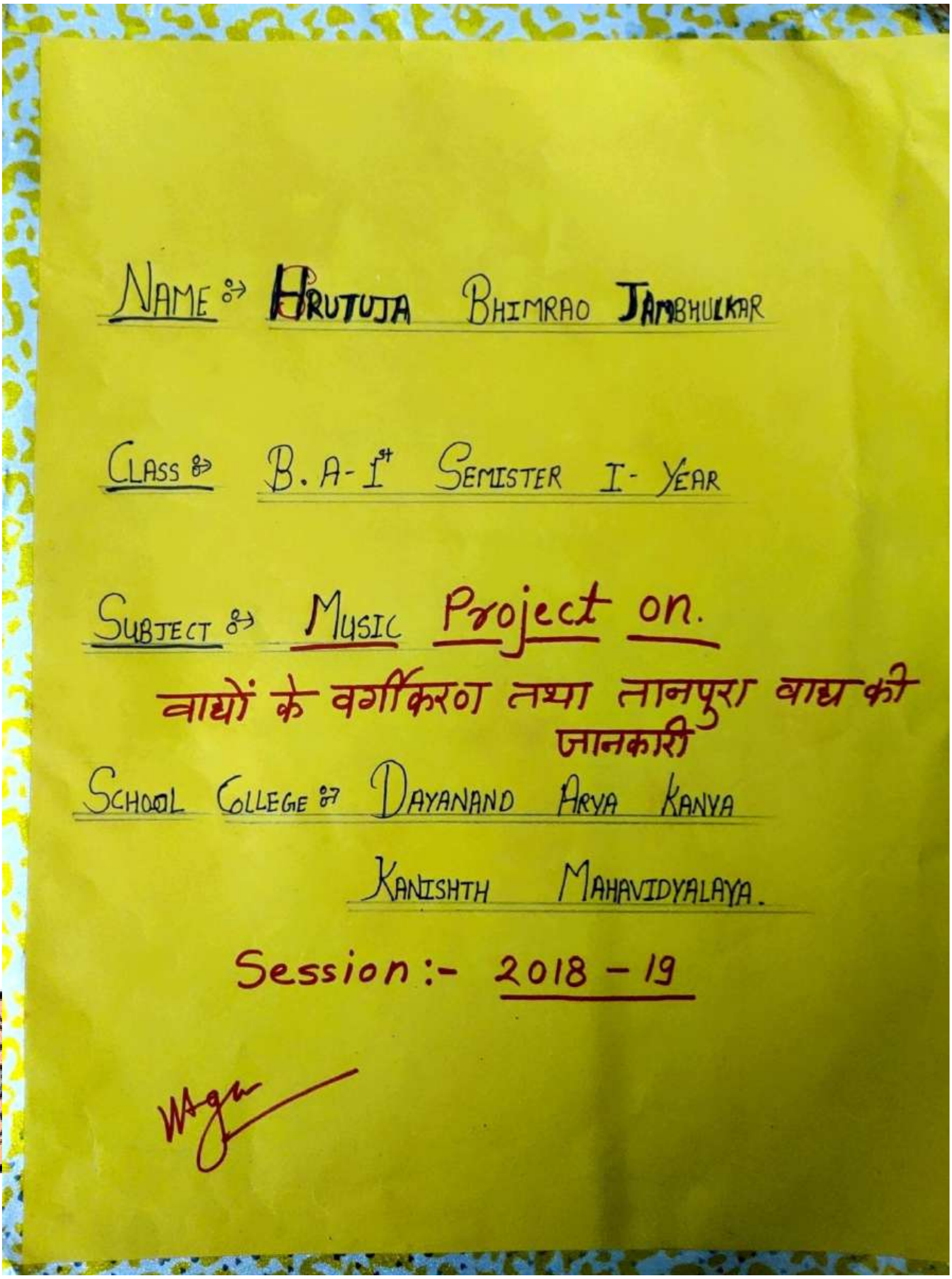


**ARYA VIDYA SABHA'S**

**DAYANAND ARYA KANYA**

**MAHAVIDYALAYA Jaripatka, Nagpur**

# ‘MUSIC PROJECT’

**Organised By**

**Department of Music**

# *CERTIFICATE*

This is to certify that the project work in the subject Music entitled Vaddyo Ke Vargikaran Tatha Tanpura Vadya Ki Jankari has been successfully completed by Ku.Hrutuja Jambhulkar of B.A.I Year during the Academic session 2018-19. Hence the certificate is awarded to her.

VAgarkar

Principal
Dayanand Arya Kanya Mahavidyalaya
Jaripatka, Nagpur

Co-Ordinator
Dr. Varsha Agarkar
Dept. Of Music
DAKM, Nagpur

Principal
Dr. S. Anilkumar
Principal, DAKM, Nagpur

# विषय का चुनाव

अगर हम संगीत के इतिहास पर नजर डाले तो यह दिखाई देता है कि संगीत का इतिहास बहोत प्राचीन है। ~~पृथ्व~~ अनादिकाल से देवीदेवताओं द्वारा संगीत चलते आ रहा है। भूलोक पर संगीत कला भरत, नारद और हनुमान आदि के द्वारा आयी। वैदिक काल मे संगीत का प्रचार प्रसार बहोत दिखाई देता है। ~~वर्त~~

वर्तमान युग में संगीत को महाविद्यालय तक पहुंचाने का कार्य पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर व पं. विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा हुआ।

छात्राओं को संगीत सिखने के लिए जो सूरों की झंकार मिलती है, जिससे आवाज सुर मे लगता हो ऐसे वाद्य की जानकारी मिले ~~व बडे~~ ~~वडे~~ इसी कारण हमने इस विषय का चुनाव किया है।

—000—

# उद्देश्य

1) महाविद्यालयीन छात्राओं को संगीत का लाभ हो सके
2) प्राचीन वाद्यों का भारतीय वाद्यों को ज्ञान हो।
3) संगीत का प्रचार प्रसार ज्यादा से ज्यादा हो।

Date /20 Page No

# तानपुरा

वाद्यो के वर्गीकरण तथा तना पुरा वाद्य की विस्तुत जानकारी ।

भारतीय वाद्यो को चार वर्गो में निम्नलिखित किया गया है।

1] तत या तंतु वाद्य
2] सुशिर वाद्य
3] अवनद्ध वाद्य या चर्म वाद्य
4] घनवाद्य

1] **तत या तंतु वाद्य** :→ इस वर्ग में वाद्यों कि निर्मिती तारों से होती है।
इसके भी दो प्रकार है।

a] **तत वाद्य** :→ इस वर्ग में एसे तारो के वाद्यों आते है जिसे मिजराग या अन्य किसी वस्तु कि टंकोर देकर बजाया जाता है। जैसे :→ सितार, सरोद, गिटार, एकतारा, तानपुरा, संतुर आदि।

b] **वितत वादय** :→ इस वर्ग में ऐसे तार वाद्य

आते है। जिन्हे गज को की सहायता से बजाया जाता है। जैसे :— सारंगी, वॉयलेन

2] **सुशीर वाद्य** :→ इस वर्ग में फुक या हवा से बजने वाले वाद्य आते है। जैसे :→ बाशुरि, हारमोनियम, और शंख।

3] **अवनद्ध वाद्य या चर्म वाद्य** :→ इस श्रेणी में चमड़े से तैयार किए हुए वाद्य आते है। जैसे :→ तबला, ढोलक, मृदग, पखवाज।

4] **घनवाद्य** :→ इस वर्ग में वाद्यों मे चोट या आघात से स्वर उत्पन्न होते है। जैसे :→ जलतरंग, घंटा, झांन्स (मंजिरा)

## तानपूरा

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तानपुरा एक महत्वपूर्ण तत् वाद्य है। तानपूरा

# तानपुरा



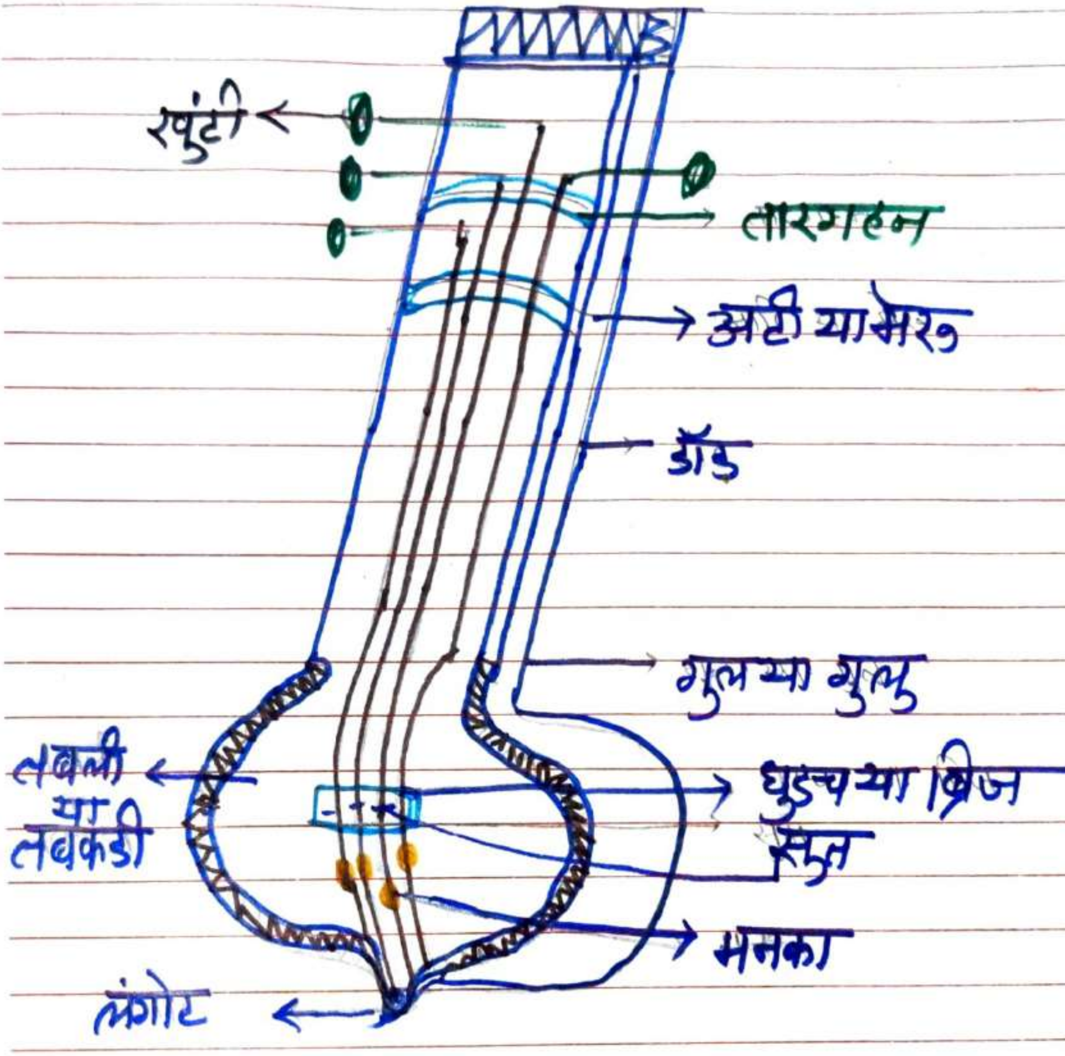

**अटी या मेरू :→** खुटियो कि ओर से हड्डी कि दुसरी पट्टी जो तारगहन के पास ही लगी होती है। उसें अटी या मेरु कहते है। इसके उपर होकर तार जाते है।

**डॉड :→** तुंबे में जुड़े लकड़ी के लंबे भाग को डाड कहते है इसें तुन, शिसम इत्यादि लकड़ी से बनाकर अंदर से खोखला रखते हैं। इसके उपर ही खुटियाँ लगी रहती है।

**गुल या गुलू :→** जिस स्थान पर तुंबा या डॉड जुड़े रहते है। उसे गुल या गुल कहते है।

**घुड़च, घोड़ी या ब्रिज :→** यह ऊँट कि हड्डी, सांभर के सिंग खैर या सिशम कि लकड़ी से बनी हुई रहती है। जो लगभग चार इंच लबी और दो इंच चौड़ी होती है। इसी के उपर तानपुरे के तार स्थिर रहते है।

में तार पिरोएं जाते है। उन्हे मनका कहते है। मनको को ऊपर या निचे करके आवश्य-कतानुसार थोड़ा उतारा या चढ़ाया जाता है। मनका हड्डी, काच, कडी, प्लास्टिक का होता है।

लंगोट :→ तुंबे कि पेंदि में लगी हुई किल को लंगोट कहते है। इसी से तार शुरू होकर खुटियों तक जाते है।

## निष्कर्ष

विषय के बारे मे जानकारी होने के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला गया की प्राचीन समय से चलते आ रहे वाद्यों का तथा रागों का उपयोग आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है।